सुबह का स्वर्गीय मन्ना (1 जुलाई)

इफिसियों 5:8,10 ज्योति की सन्तान के समान चलो... और यह परखो कि प्रभु को क्या भाता है।

यदि हम परमेश्वर के लिये सत्य के द्वारा अलग (पवित्र) किये गए हैं - यदि हमारी इच्छाएँ मर चुकी हैं, और हमने पूरी तरह से परमेश्वर की इच्छा को अपना बना लिया है, विचारों में, शब्दों में, क्रियाओं में, तो हमने परमेश्वर की इच्छा को प्राप्त कर लिया है और हम अवश्य जय पाने वालों के लिये जो इनाम रखे गये हैं उन्हें जीतेंगें; तब भी जीतेंगे जब अवसरों ने हमारा इंकार   किया हो, हमने कभी भी उपदेश न दिये हों, कभी भी किसी गरीब को कुछ न दिया हो और सच्चाई के लिए कभी भी शहीद न हुये हों। आइये हम सब इस बात पर ध्यान दें - "क्योंकि परमेश्वर की (तुम्हारे लिये) इच्छा ये है की तुम पवित्र बनो"। किसी भी चीज को इस सत्य पर पर्दा डालने या इसे अस्पष्ट करने नहीं देना है। न दूसरे सत्य को और न ही गलत उपदेशों को इस सच्चाई पर पर्दा डालने देना है। हमारे जीवन के इस मार्ग में पवित्रता को प्रभुता करने दें। और यदि परमेश्वर की ही इच्छा हमारी इच्छा है तो हमारे सामने एक स्पष्ट और साफ़ मार्ग है, जो कि बहुत ही महत्वपूर्ण मार्ग है। Z.'99-4 R2412:2 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (2 जुलाई)

1 कुरिन्थियों 4:12 लोग बुरा कहते हैं, हम आशीष देते हैं; वे सताते हैं, हम सहते हैं।

यदि आप विश्वासी चेले हैं तो आपको यह देखने में देर नहीं लगेगी कि मसीह में स्वतंत्रता की व्यवस्था, मसीह की व्यवस्था सच्चे विचारों और हृदय के इरादों को पहचानने में मदद करती है ताकि यद्यपि आपको निश्चय ही सब प्रकार के पापों से घृणा करनी है, फिर भी आप किसी पापी से घृणा नहीं कर सकते और इस पर भी परमेश्वर का प्रेम आपके हृदय में सिद्ध होता जाता है। लेकिन इसके बावजूद भी यदि हमारे मन में अपने निंदकों और अपमान करने वालों के विरुद्ध कोई कड़वी भावना उठे, तो हमें ऐसी भावना से पलट कर लड़ना है और पूरी तरह से इन कड़वी भावनाओं पर इस तरह से जय पाना है कि हमारा रेशा - रेशा अपने गुरु की शिक्षाओं से एक मधुर ताल - मेल रखे "अपने बैरियों से प्रेम रखो और अपने सताने वालों के लिये प्रार्थना करो। उन्हें आशीष दो, बुरा न करो"। Z.'99-5 R2412:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (3 जुलाई)

भजन संहिता 16:8 मैंने यहोवा को निरन्तर अपने सम्मुख रखा है: इसलिये कि वह मेरे दाहिने हाथ रहता है मैं कभी न डगमगाऊंगा॥

वह जिसने अपनी इच्छा को पूरी तरह से परमेश्वर की इच्छा में गाड़ दिया है, उसकी किसी भी तरह की निराशा से कोई पहचान नहीं हो सकती है। बल्कि वो अपने जीवन के हर मामले में विश्वास के द्वारा दिव्य प्रबंध या दिव्य निगरानी को देखता है और उसे जीवन के सारे मामलों में प्रभु के वचन ये आश्वासन देते हुए सुनते हैं कि "जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती है; अर्थात उन्हीं के लिये जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं।" जब हम बड़े विरोधी शैतान के और दुनिया के और अपने शरीर के विरोधों को धीरज से, बिना किसी शिकायत के, बिना बड़बड़ाये, आनंदपूर्वक ग्रहण करने में सक्षम हो जाते हैं, उन्हें अनुशासन संबंधी अनुभवों का हिस्सा समझकर जिसे कि हमारे बहुत बुद्धिमान और बहुत प्रेम करने वाले प्रभु ने हमारे लिये निर्धारित किया है, तब यह हृदय की उन्नत अवस्था तक पहुँचने का सबूत है। Z.'99-6 R2412:6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (4 जुलाई)

यशायाह 53:1 जो समाचार हमें दिया गया, उसका किसने विश्वास किया? और यहोवा का भुजबल किस पर प्रगट हुआ?

अभी के समय में चर्च का बुलावा इसलिये है की वो सत्य की रौशनी को मनुष्यों के सामने चमकने दे और इस तरह से अपने लिये अत्याचार को

आकर्षित करें। और सभी अत्याचार को धार्मिकता के निमित्त धीरज से सहे। और चर्च को इन अत्याचारों का सामना करने का उचित अभ्यास हो पाये इसके लिये ये जरुरी है कि वो सभी सताने वालों और मनुष्यों के प्रति अत्याचारों के बीच में भी धीरज, भाईचारा, दया और प्रेम दिखाएँ ... तब सभी लोगों को जो इनाम को देखते हैं और जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के चेहरे पर परमेश्वर के महिमा की चमक को देखते हैं, उन्हें अपने पिता की शर्तों, बुलावे और सेवाकार्यों के प्रति विश्वासी होना चाहिये। ऐसे सभी लोगों को इस सेवाकार्य (सत्य की रौशनी को मनुष्यों में चमकाने का कार्य) पर ध्यान देना चाहिये जिसका सुसमाचार हमें प्राप्त हुआ है। हमें इन कार्यों को करते हुए डगमगाना नहीं है, न ही हताश होना है, चाहे मनुष्य हमारी बातों को सुनें या वे इन्हें सुनने से अपने आपको रोकें, चाहे वे हमारे बारे में बुरा सोचें या हमारे बारे में बुरा बोलें, आइये हम ये याद रखें कि इन परीक्षाओं के अंत में हमारी रिपोर्ट खुद प्रभु यीशु मसीह परमेश्वर को देंगे जब परमेश्वर अपने गहनों को बना रहे होंगे। Z.'99-10,11 R2415:3,6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (5 जुलाई)

2 कुरिन्थियों 10:4,5 क्योंकि हमारी लड़ाई के हथियार शारीरिक नहीं, पर गढ़ों को ढा देने के लिये परमेश्वर के द्वारा सामर्थी हैं। इसलिए हम कल्पनाओं का और हर एक ऊंची बात का, जो परमेश्वर की पहिचान के

विरोध में उठती है, खण्डन करते हैं; और हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं।

आइए हम ये याद रखें कि, परमेश्वर के द्वारा हमें स्वीकारे जाने की पहली शर्त है -- उनके वचनों के प्रति वफ़ादारी से आज्ञापालन करना, जो की उनके लिए हमारे प्रेम और उनमें हमारे विश्वास का सबूत है। आइए हम ये भी याद रखें कि जो दूसरी योग्यता परमेश्वर हममें देखते हैं वो है भाइयों के लिए प्रेम, और जो लोग सचमुच में परमेश्वर के सच्चे समर्पित बच्चे हैं, उनके लिए कुछ भी करने को, दुःख उठाने को, या उनके बदले मरने को भी सदा तत्पर रहने को तैयार रहते हैं। परमेश्वर के बताए हुए मार्ग पर चलने का प्रयत्न करते हैं। Z.'99-11` R2415:6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (6 जुलाई)

भजन संहिता 25:12 वह कौन है जो यहोवा का भय मानता है? यहोवा उसको उसी मार्ग पर जिस से वह प्रसन्न होता है चलाएगा।

हमें कौन सी परीक्षाएँ और कठिनाइयाँ घेर सकती हैं, इसकी निगरानी हमें नहीं करनी है। हमें अपने आप को प्रभु के लिए अनारक्षित रूप से समर्पित कर देना है, और इसके बाद हमारी परीक्षाएँ और घेराव कितने बड़े होंगें, प्रभु के मार्गदर्शन में चलने के लिये हमें कितने बड़े बलिदान करने होंगें - इन सबका निर्णय प्रभु पर छोड़ देना है। प्रभु यह देख सकते हैं की कुछ

लोगों को दूसरों की तुलना में विशेष परीक्षाओं की आवश्यकता है, और वे वस्तुएँ जो कुछ लोगों को बड़ी परीक्षाएँ और बड़ा बलिदान लगेंगी, वही परीक्षाएँ और बलिदान दूसरों को, प्रभु और उनके कारणों के प्रति अधिक प्रेम होने के कारण, सेवा कार्यों के लिये अधिक उत्साह होने के कारण, "पल भर का हल्का सा क्लेश" लग सकते हैं, जो की "उनके लिये बहुत ही महत्वपूर्ण और अनन्त महिमा उत्पन्न करते जाते हैं" - जैसा की प्रेरित पौलुस ने अपनी पत्री में खुद के लिये कहा था। `Z.'99-13` R2416:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (7 जुलाई)

यूहन्ना 1:36 देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है।

प्रभु के सभी सेवकों को दूसरों का ध्यान प्रभु पर लाना चाहिए और स्वयं पर नहीं। आइए हम अपनी ऊर्जा दूसरों को परमेश्वर के मेम्ने की ओर मोड़ने में लगाएं, न कि स्वयं की ओर मोड़ने में ... विनम्रता जहाँ भी पाया जाता है, एक रत्न है, आत्मा के अनुग्रहों में से एक है, जिसे बड़े पैमाने पर विकसित करने और चमकाने की खोज में, प्रभु के सभी समर्पित लोगों को रहना चाहिए ... और आइये हम यह याद रखें कि, प्रभु यीशु का सबसे अच्छे अर्थों में चेला होने का मतलब है कि, हम उनके मार्गों पर चलें, प्रभु जो आज करते, बारीकी से बिलकुल वैसा ही करने का पूरा प्रयत्न करें,

प्रभु ने निजी तौर पर जो किया था और जो कहा था, और प्रेरितों के माध्यम से उन्होंने अपने दुखों में सहभागी होने, महिमा के मार्ग, और उनके राज्य में साँझा - वारिस होने से सम्बंधित हमारे लिए जो शिक्षाएँ छोड़ी हैं, उससे हम अपना पाठ सीखें। `Z.'99-14,15` R2418:1 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (8 जुलाई)

1 तीमुथियुस 3:15 जो जीवते परमेश्वर की कलीसिया है, और जो सत्य का खंभा, और नींव है।

केवल प्रभु की चर्च ही है, जिसपर यह नाम - कलीसिया या देह या चर्च उचित रीती से लागू होता है। यह बहुत ही मामूली सी, साधारण सी, आडम्बर रहित और दुनिया के धन की तुलना में इतनी गरीब और तुच्छ है, कि इसे सांसारिक दृष्टिकोण से पहचाना नहीं जाता है और न ही पहचाना जा सकता है। यह न तो मनुष्यों की बनाई हुई है और न ही मनुष्यों का शासन इसपर चलता है; न ही इसके सदस्यों के नाम पृथ्वी पर लिखे गए हैं, बल्कि इसके सदस्यों के नाम स्वर्ग में लिखे हुए हैं। (इब्रानियों 12:23) इसका सिर और अध्यक्ष प्रभु यीशु मसीह हैं, इसका कानून परमेश्वर के वचन हैं: इसका केवल एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास है, एक ही बपतिस्मा है; और इसका निमार्ण पवित्र प्रेरितों और

भविष्यद्वक्ताओं की गवाहियों पर हुआ है - इसकी नींव की चट्टान या कोने का पत्थर स्वयं प्रभु यीशु मसीह हैं। `Z.'99-37` R2429:1 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (9 जुलाई)

यूहन्ना 10:4 जब वह अपनी सब भेड़ों को बाहर निकाल चुकता है, तो उनके आगे आगे चलता है, और भेड़ें उसके पीछे पीछे हो लेती हैं, क्योंकि वे उसका शब्द पहचानती हैं।

अच्छे चरवाहे का शब्द विभिन्न ध्वनियों का इस तरीके से मिश्रण है की, किसी और शब्द में ऐसा मिश्रण नहीं पाया जाता है। अच्छे चरवाहे के शब्द से न्याय के स्वर की ध्वनि आती है जो कि प्रेम के स्वर से मिली होती है, और इसका पूरा लय ज्ञान और शक्ति के स्वरों के साथ होता है। दूसरे सिद्धान्त, योजनाएं और मनुष्य और शैतान की तरकीबों के स्वरों में ऐसा तालमेल नहीं होता है, जैसा तालमेल हमारे बड़े चरवाहे के संदेशे में है, जो उन्होंने हमको अपने पुत्र के द्वारा भेजा है। इसके अलावा जब सच्ची भेड़ अच्छे चरवाहे के शब्द को सुनती है, तो वे शब्द उसके सभी मनोरथों को इस तरह से पूरा करते हैं, जो की और कुछ नहीं कर सकता। तब सच्ची भेड़ कोई खतरे में नहीं होगी की, वह दूसरे शब्दों के द्वारा आकर्षित हो, या दूसरे सिद्धान्तों या दूसरे तरकीबों से आकर्षित हो, पर

सबको यही उत्तर देगी, "प्रभु यीशु ने मुझे संतुष्ट किया है; प्रभु यीशु मेरे हैं"। Z.'00-230` R2672:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (10 जुलाई)

लूका 4:22 सब ने उसे सराहा, और जो अनुग्रह की बातें उसके मुंह से निकलती थीं, उनसे अचम्भित हुए।

प्रभु यीशु के पदचिन्हों पर चलने वाले अनुयायिओं को जितना सम्भव हो सके ऐसा ही करना है, जैसा की ऊपर का वचन कहता है: उनकी वाणी में अनुग्रह होना बहुत जरुरी है, मध्यस्थर होना चाहिए, उनके हृदय सच्चाई के प्रति और उनके प्रति प्रेम से भरे सहानुभूति से उमड़ने चाहिए, जो इस सच्चाई को खोज रहे हैं और इससे प्रेम करते हैं। प्रभु के चेलों के वचन हर समय प्रभु के कारणों और धार्मिकता के दायरे के अन्दर होने चाहिए, और उनको परमेश्वर के वचन के साथ कड़ाई से सहमति रखनी चाहिए। और हमारा व्यवहार, चाल-चलन, एक जीवित पुस्तिका के समान होना चाहिए, हमें वचनों साथ ऐसा तालमेल रखना चाहिए कि हमारे दुश्मन भी आश्चर्य करें, और ये जान पाएं, की हम भी प्रभु यीशु के साथ रहे हैं और उनसे सीखा है। `Z.'99-53` R2437:6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (11 जुलाई)

1 यूहन्ना 5:18 हम जानते हैं, कि जो कोई परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह पाप नहीं करता; .... उसे वह बचाए रखता है, और वह दुष्ट उसे छूने नहीं पाता।

जब तक हमारा हृदय (हमारा मन, हमारी इच्छा) पवित्र है, परमेश्वर और धार्मिकता के साथ तालमेल में है, -- कहने का मतलब ये है कि, जब तक हमें जो नयी सृष्टि मिली है परमेश्वर से, पवित्रता की आत्मा, जब तक ये पवित्र आत्मा हमारे में है -- ये नया मन पाप की मंजूरी नहीं दे सकता, पर इस नए मन को जरुरी है की ये पाप का विरोध करे। यहाँ तक की बहुत सारा युद्ध जो हम खुद के गिरे हुए और कमजोर स्वभाव से लड़ते हैं, खुद की इच्छा और चाहत से लड़ते हैं, फिर भी, हम "नई सृष्टि" के रूप में, शरीर से भिन्न और अलग हैं, और हमारे शरीर की कमजोरियां और अपरिपूर्णताएं मसीह में नई सृष्टि पर लागू नहीं होती, पर हमारी इन कमजोरियां और अपरिपूर्णताओं को ढका हुआ माना जाता है, हमारे प्रभु यीशु के छुटकारे के बलिदान के मूल्य द्वारा। `Z.'99-58` R2440:4 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (12 जुलाई)

यूहन्ना 8:36 इसलिए यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करेगा, तो सचमुच तुम स्वतंत्र हो जाओगे।

प्रभु के सच्चे चेले जो अपने गुरु के चरणों में बैठकर उनके वचनों को ध्यान देकर सुनेंगे, और सभी चीज़ों में उनके चेले बने रहेंगे, वे न ही केवल अन्धविश्वास और अज्ञानता से छुटकारा पाएंगे, पर पाप की सेवा से भी स्वतंत्रता पाएंगे; और वे अपनी स्वभाविक कमजोरियों और कलंक को, और दिव्य मन -- यानी सत्य को पहचानेंगे। इसके परिणाम में, उनकी स्वतंत्रता वह है जो उन्हें हानि करने के बजाय आशीष देती है; जो गर्व और घमंड के बजाय विनम्रता लाता है; जो क्रोध के बदले में धैर्य लाता है; जो द्वेष और स्वार्थ के बदले उदारता और परोपकार लाता है; जो आत्मा की असंतुष्टि और कड़वाहट के बजाय आनंद और शांति लाता है। सचमुच में, पुत्र ही हमें वास्तव में स्वतंत्र कर सकता है। `Z.'99-57` R2440:2 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (13 जुलाई)

2 कुरिन्थियों 11:14,15 शैतान आप भी ज्योतिमर्य स्वर्गदूत का रूप धारण करता है। इसलिये यदि उसके सेवक भी धर्म के सेवकों का सा रूप धरें, तो कुछ बड़ी बात नहीं।

अगर यह पूछा जाए कि शैतान एक अच्छा काम करने में कैसे दिलचस्पी ले सकता है? हम उत्तर देते हैं, विरोधी इस प्रकार ज्योति और दया के दूत का वस्त्र पहनता है, लेकिन ऐसा वह लोगों को जगत की ज्योति की ओर ले जाने के लिये नहीं करता है - मसीह के क्रूस की ओर ले जाने के लिये नहीं करता है - बाइबल की ओर ले जाने के लिये नहीं करता है - बल्कि इन सबसे दूर ले जाने के लिये करता है, उद्धार की दूसरी आशा की ओर, दूसरे शिक्षक की ओर ले जाने के लिये करता है, ताकि यदि हो सके तो अत्यंत चुने हुओं को भरमा देता। और यह याद रखें कि हमें हमारे प्रभु के वचनों से संकेत मिलता है कि, जब मामले इस स्थिति में आते हैं कि, शैतान ही शैतान को निकाले और बिमारियों को चंगा करे, तो यह एक स्पष्ट प्रमाण है कि, उसका सिंहासन उसके गिरने का संकेत दे रहा है - कहने का मतलब यह है कि, यह लोगों को भरमाने के लिये किये गए उसके प्रयासों की अंतिम चरम सीमा होगी। `Z.'99-62` R2669:6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (14 जुलाई)

इफिसियों 4:31 सब प्रकार की कड़वाहट, और प्रकोप और क्रोध, और कलह, और निन्दा, सब बैरभाव समेत तुम से दूर की जाए।

परमेश्वर के दिव्य स्तर के अनुसार, एक उन्नति किया हुआ मसीही यह देखता है कि, प्रभु की दृष्टि में किसी के प्रति कड़वाहट रखना हत्या के बराबर है, किसी की निंदा करना उसके चरित्र का हनन करने के बराबर है, पड़ौसी के अच्छे नाम को नष्ट करना उसकी इज्जत लुटने या चोरी डकैती के अपराध के बराबर है। और यदि इनमें से कुछ भी कलीसिया के साथ किया जाये, परमेश्वर के लोगों के बीच में, तो वह दो गुणा ज्यादा बुरा है - वो एक सच्चाई के भाई की हत्या और डकैती करने के बराबर है ... "किसी को बदनाम न करें", इस नियम को केवल एक ही परिस्थिति में छोड़ा जा सकता है, जब हमको यह मालूम चले की, किसी की कोई बुराई के बारे में बताना अत्यंत आवश्यक है - जहाँ बुराई से सम्बंधित बात हमारे मन की इच्छाओं के विपरीत होगी, लेकिन इसका उल्लेख केवल अनिवार्य आवश्यकता के कारण किया जाये - दूसरों के प्रति प्रेम के कारण, क्योंकि यदि उन्हें सूचित नहीं किया गया, तो उनको चोट पहुँच सकती है। `Z.'99-71` R2444:6; R2445:1 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (15 जुलाई)

1 कुरिन्थियों 13:3 यदि मैं अपनी सम्पूर्ण संपत्ति कंगालों को खिला दूं, ... और प्रेम न रखूं, तो मुझे कुछ भी लाभ नहीं।

दूसरों के लिए हमारी जो सेवा है, उसमें हमें यह नहीं भूलना है कि पैसा ही एकमात्र ऐसी चीज नहीं है, जिसकी लोगों को जरुरत है -- कुछ लोगों को प्रेम और सहानुभूति की जरुरत है, जिनको पैसे की जरुरत नहीं है। हमारे प्रभु यीशु इसमें के ही थे: उनका खुद का ह्रदय, प्रेम से भरा था, फिर भी यहाँ तक की इस गिरी हुई जाती में से जो श्रेष्ठ भी थे, जिसका प्रतिनिधितत्व उनके प्रेरितों ने किया, कम या ज्यादा, इनके बीच में भी, प्रभु यीशु को तुलनात्मक रूप से कम संगति मिली। मरियम में प्रभु यीशु उस प्रेम की गहराई को खोज पाए और उस भक्ति को खोज पाए जो प्रभु यीशु के लिए एक मीठी सुगन्ध के जैसी थी, उस धूप की तरह, जो उन्हें ताज़गी देती थी, एक शक्तिवर्धक दवाई के जैसी जो उन्हें शक्ति देती थी। और मरियम ने प्रभु के प्रेम और सहानुभूति के प्रति दूसरों की तुलना में ज्यादा आभार प्रगट किया, हमारे गुरु के चरित्र की लम्बाई और चौड़ाई को अच्छे से तुलनात्मक रूप से जाना। मरियम न ही सिर्फ प्रभु यीशु के क़दमों में बैठने से आनन्दित होती थी, ताकि वह उनसे सिख सके, पर वह प्रभु के प्रति अपने प्रेम और भक्ति को प्रगट रूप से दिखाकर भी आनन्दित होती थी। `Z.'99-77` R2448:3 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (16 जुलाई)

इफिसियों 5:18 आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ।

पवित्र आत्मा से हम कितना भरते हैं, यह इस बात पर निर्भर करेगा की, हमने खुद को स्वयं की इच्छा की आत्मा से कितना खाली किया है, और उसके बदले में स्वयं को विश्वास और आज्ञाकारिता की आत्मा से कितना भरा है। और हालाँकि आज्ञाकारिता स्वयं को दैनिक जीवन में प्रकट करने की अपेक्षा नहीं कर सकती है, फिर भी यह **इरादे** की, **इच्छा** की, **मन** की, आज्ञाकारिता है, जिसका की प्रभु अपने पवित्र लोगों में आदर करते हैं। इसलिए कुछ लोग जिनके हृदय प्रभु के प्रति पूर्ण रूप से वफादार हैं, वे परमेश्वर को भावते हुए हो सकते हैं, जबकि वही लोग, दुनिया में जिनके साथ संपर्क में आते हैं, हो सकता है उन लोगों को खुश न कर पायें; जबकि अन्य लोग जो की, बाहरी नैतिकता के कारण, "बाहरी पुरुषों के बीच अत्यधिक सम्मानित", होते हैं, परमेश्वर की दृष्टि में "घृणित" हो सकते हैं, अपने मन के ठंडेपन या बेईमानी के कारण। फिर भी, वह जिसके पास अपने अंदर नई आशा है, और नई आत्मा है, वह न केवल अपने विचारों में, बल्कि अपने शब्दों और क्रियाओं और अपने सभी मामलों में, भीतर और बाहर की ओर से खुद को शुद्ध करने की कोशिश करेगा। `Z.'99-92` R2456:2 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (17 जुलाई)

यशायाह 26:3 जिसका मन तुझ में धीरज धरे हुए है, उसकी तू पूर्ण शान्ति के साथ रक्षा करता है, क्योंकि वह तुझ पर भरोसा रखता है।

ये सांसारिक शांति नहीं है, बेपरवाही की शांति नहीं है, आलस्य की शांति नहीं है, भोग-विलास में डूब जाने की शांति नहीं है, भाग्य पर भरोसा करने की शांति नहीं है; लेकिन यह मसीह की शांति है - "मेरी शांति"। जब हम पीछे मुड़कर देखते हैं, तो हम ये देखते हैं की, स्वामी ने परमेश्वर के साथ हर परिस्थिति में इस शान्ति को बनाए रखा। यह एक ऐसी शांति है जो दिव्य ज्ञान, प्रेम, न्याय और शक्ति पर आँख मूंद कर भरोसा करती है, एक ऐसी शांति जो प्रभु के विश्वासी लोगों से किए गए परमेश्वर के अनुग्रह से भरे वादे को याद करती है - यह याद रखती है कि, जो प्रभु के प्रति विश्वासी लोग हैं, उनको कुछ भी किसी भी तरह से कोई भी हानि नहीं पहुँचा सकता, और यह कि सब चीजें मिलकर उनकी भलाई के लिए काम करेगी, अर्थात उन्हीं के लिए जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं। यह शान्ति विश्वास के द्वारा उस सब कुछ को स्वीकार करती है, जिसकी अनुमति परमेश्वर के दिव्य प्रावधान देते हैं, और अपने आँसुओं के माध्यम से भी यह शांति उन परम आशीषों को आनन्द से भरी उम्मीदों के साथ देख सकती है, जिन्हें देने का वादा हमारे स्वामी ने किया है, और जिनमें से अभी की शांति और आनंद केवल पूर्वानुभव हैं। `Z.'99-95` R2456:6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (18 जुलाई)

2 तीमुथियुस 3:1,4 अन्तिम दिनों में कठिन समय आएंगे। मनुष्य विश्वासघाती, ढीठ, ... और परमेश्वर के नहीं वरन सुखविलास ही के चाहने वाले होंगे।

सच्चा मसीही "घमण्डी" मसीही नहीं होता है; इसके विपरीत, जब उसने प्रभु को समर्पण किया है, तो इशारे वाली भाषा में उसका सिर कटा हुआ है। उसने अपना सिर खो दिया है, अपनी स्वंय की इच्छा और अपनी इच्छा के अनुसार स्वयं को नियंत्रित करने को त्याग दिया है, और अपने आप को मसीह की देह के सदस्य के रूप में, पूरी तरह से अपने सिर, प्रभु यीशु के नियंत्रण में सौंप दिया है। इसलिए एक सच्चा मसीही, अपने जीवन के हर मामले में, -- उससे सम्बन्धित सुख विलास की चीज़ें हों, या उसके बोझ और क्लेश हों, -- वो अपने सिर, यानी प्रभु यीशु से निवेदन करता है कि, वे उसका मार्गदर्शन करें, ताकि वह जान पाए की उसे क्या करना या कहना है और कैसे करना या कहना है -- जी हाँ, ताकि यहाँ तक की उसके मन के विचार भी मसीह में परमेश्वर की इच्छा से पूरा तालमेल रखें। `Z.'99-102` R2461:1 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (19 जुलाई)

यूहन्ना 18:11 जो कटोरा पिता ने मुझे दिया है, क्या मैं उसे न पीऊं?

हमारे प्रिय उद्धारकर्ता के सेवा कार्य में उनके अन्दर से अनुग्रह से भरी नम्रता कैसे चमक के जीवन के हर छोटे मामले में बाहर दिखती है; यहां तक कि अपने दुश्मनों को अपने आप को समर्पण करने के क्षण में भी, वह यह दावा नहीं करते हैं कि, वह बहुत बड़ा कार्य कर रहे हैं, न ही यह बताते हैं की ऐसा वे खुद की इच्छा से कर रहे हैं, और न ही एक शहीद के रूप में वे प्रशंसा चाहते हैं! प्रभु यीशु यह साधारण सच्चाई बताते हैं की, वे ऐसा इसलिए कर रहे हैं, क्योंकि वे निजी तौर पर पिता के प्रति कितने वफादार हैं, इसके सबूत के रूप में पिता उनसे यही चाहते हैं। वे अपने आप को परमेश्वर के सेवक के रूप में स्वीकार करते हैं, ऐसे पुत्र के रूप में जिन्होंने दुःख उठाकर आज्ञापालन करना सीखा है। प्रभु के पीछे चलने वालों को, शायद, इसके अलावा कोई और पाठ नहीं चाहिए, पर उनको अपने अन्दर ये इच्छा रखनी है की, जो कटोरा पिता हमारे लिए उंडेलते हैं, उसको पीने के लिए हमें इच्छुक होना चाहिए -- यह इस बात की पहचान है कि, पिता हमारे मामलों में हमारा मार्गदर्शन और निर्देशन कर रहे हैं, क्योंकि उनके अभिषेक किये गए पुत्र की देह के सदस्य के रूप में हम उनके हैं।`Z.'99-118`; `Z.'01-91` R2468:6; R2780:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (20 जुलाई)

यूहन्ना 15:1,2 सच्ची दाखलता मैं हूं; और मेरा पिता किसान है... जो डाली मुझ में है, और जो फलती है, उसे वह छांटता है ताकि और फले।

जैसा कि दाखलता में सबसे अच्छी शाखाएँ, जो फल-फूल देने का प्रमाण देती हैं, को भी छंटाई की आवश्यकता होती है, वैसे ही प्रभु के लोगों में सबसे ईमानदार और उत्साही लोगों को भी प्रभु के अनुशासन और संभावित देखभाल की आवश्यकता होती है - अन्यथा वे जल्द ही लकड़ी बनने की ओर जा सकते हैं और बहुत फल लाने में असफल हो सकते हैं ... परमेश्वर के सच्चे बच्चे जिनकी इच्छा पूरी तरह से प्रभु की इच्छा में डूबी हुई है, वे इन छँटाईयों से न तो अप्रसन्न होते हैं और न ही निराश होते हैं। उन्होंने कम से कम अपनी खुद की मूर्खता को जाना है, और महान किसान की बुद्धिमत्ता पर दृढ़ भरोसा किया है। इसलिये जब दिव्य प्रावधानों के अंतर्गत उसके प्रयासों को अस्वीकार करके दूसरी दिशा में मोड़ दिया जाता है, तो वे अपनी योजनाओं की असफलताओं को आनंदपूर्वक लेते हैं, इस बात से आश्वस्त होकर की प्रभु की इच्छा और प्रभु का मार्ग सबसे अच्छा है, और प्रभु का इरादा इन सबके द्वारा उसके लिये आशीष लाना है। `Z.'99-109` R2465:3 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (21 जुलाई)

यूहन्ना 18:37 मैं ने इसलिये जन्म लिया, और इसलिये जगत में आया हूं कि सत्य पर गवाही दूं।

यह हमारे प्रभु की सत्य के प्रति विश्वसनीयता थी जिसने प्रभु के ऊपर उन लोगों का विरोध लाया जिनकी आँखें विरोधी शैतान ने अंधी कर दी थी। यह सत्य की गवाही थी जिसकी कीमत में प्रभु को अपनी जान देनी पड़ी, और सत्य के बचाव में उन्होंने जो अपनी जान दी, वही हमारे छुटकारे का दाम बना। उसी प्रकार से प्रभु के सभी चेलों को भी सत्य की गवाही देनी है - परमेश्वर के चरित्र और उनकी योजना से सम्बंधित सत्य ... सत्य की ऐसी गवाही के लिये ही यीशु मसीह के सभी सच्चे चेलों को अपने जीवन की कीमत देनी होगी, उन्हें अपने आपको जीवित, पवित्र और मसीह के द्वारा परमेश्वर को भावता हुआ बनाकर बलिदान करना होगा। आइये हममें से प्रत्येक जिनकी जीवन के राजकुमार के साथ उनके राज्य में साँझा वारिस बनने की आशा है, सत्य की गवाही दें - राज्य से सम्बंधित एक अच्छा अंगीकार करें, इसकी नींव और महिमा में सर्वश्रेष्ठ रचना आदि के बारे में लोगों को अच्छे से बताएँ।`Z.'99-123` R2471:6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (22 जुलाई)

भजन संहिता 34:18,19 यहोवा टूटे मन वालों के समीप रहता है, और पिसे हुओं का उद्धार करता है। धर्मी पर बहुत सी विपत्तियां पड़ती तो हैं, परन्तु यहोवा उसको उन सब से मुक्त करता है।

धर्मी चाहे सात बार गिरे तौभी उठ खड़ा होता है। (नीतिवचन 24:16) अगर किसी भी समय हमें लगता है कि हमने एक गलत मार्ग ले लिया है, जिससे दुबारा वापस आना मुश्किल है, तो जैसा की प्रभु ने पहले से ही कह दिया है, हम यह उम्मीद कर सकते हैं कि, उस मार्ग में कुछ निराशा सामने आएगी; लेकिन साथ ही, प्रभु उस मार्ग में, टूटे हुए मन के लिये प्रभु के प्रति नम्रता, और अधिक उत्साह, और भविष्य के लिये अधिक सतर्कता और विश्वसनीयता के रूप में कुछ आशीषें भी दे सकते हैं। इस प्रकार यहां तक कि जीवन की कुछ बड़ी गलतियाँ भी अनुग्रह और सच्चाई के ऊँचे स्तर पर जाने के लिए कदम का पत्थर बन सकती हैं। `Z.'03-217` R3223:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (23 जुलाई)

1 तीमुथियुस 5:8 पर यदि कोई अपनों की और निज करके अपने घराने की चिन्ता न करे, तो वह विश्वास से मुकर गया है और अविश्वासी से भी बुरा बन गया है।

"विश्वास" के अन्दर प्रेम, सहानुभूति, और दूसरों की देखभाल और उनके हित से जुड़े विचार भी शामिल हैं, ख़ासकर विश्वास के घराने के लिए। ये कितने अच्छे से हमारे प्रभु यीशु के सहानुभूति वाले स्वभाव के बारे में बताता है, कि वे दूसरों की हित के बारे में उस समय सोच रहे थे, जब वे खुद सबसे कष्ट के समय में थे! प्रभु के खुद का कष्ट उन्हें अपनी माँ की देखभाल के लिए सोचने से नहीं रोकता है, और उनके लिए आराम के प्रावधान के बारे में सोचने से नहीं रोकता। इस बात पर ध्यान दें कि प्रभु यीशु ने यूहन्ना को अपनी माँ की देखभाल के लिये चुना था - निःसंदेह ऐसा इसलिए था क्योंकि, पहला, यूहन्ना का स्वभाव प्रेम और कोमलता से भरा था; दूसरा, उसके पास प्रभु और सत्य के लिये बहुत जोश था; और तीसरा, उसके पास अपनी जान को खतरे में डालकर अपने स्वामी की मृत्यु के समय उनके निकट रहने का साहस था। आइये हम इन गुणों पर ध्यान दें, क्योंकि वे वही गुण हैं जिनको प्रभु स्वीकृति देते हैं, और इनपर ध्यान दें ताकि हम इन गुणों को खुद में बढ़ा सकें, और इस प्रकार से उसी स्वामी के द्वारा उनकी सेवा कार्यों को करने के विशेष अवसर प्राप्त कर सकें। `Z.'99-127` R2474:6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (24 जुलाई)

याकूब 5:16 धर्मी जन की प्रार्थना के प्रभाव से बहुत कुछ हो सकता है।

प्रभु के साथ प्रार्थना में वार्तालाप करने से, प्रभु के हमारे प्रतिदिन के मामलों पर कि जा रही निगरानी पर हमारा भरोसा बढ़ता है; परमेश्वर के

वचनों में जो सारे बहुत ही बड़े और बहुमूल्य वादें हैं, उनपर हमारा विश्वास बढ़ता है; उन्होंने हमारे अतीत में और वर्तमान में जो भी हमारा मार्गदर्शन किया है और कर रहे हैं, हम उसे और अधिक महसूस कर पाते हैं; मसीह के सभी भाइयों के लिए प्रेम बढ़ता है, और भाइयों के कल्याण और उनकी आत्मिक उन्नति के लिए हमारी व्याकुलता भी बढ़ती है। इसलिए प्रार्थना का बहुत करीबी और सक्रीय सम्बन्ध हमारी आत्मिक उन्नति से है -- परमेश्वर, भाइयों और सभी मनुष्यों की ओर, आत्मा के फलों में की गई उन्नति से प्रार्थना का सम्बन्ध बहुत गहरा है। `Z.'00-268` R2692:1 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (25 जुलाई)

याकूब 4:12 व्यवस्था देनेवाला और हाकिम तो एक ही है, जो बचाने और नाश करने की समर्थ है; पर तू कौन है, जो अपने पड़ोसी पर दोष लगाता है?

यह इस विचार के साथ तालमेल रखता है कि प्रेरित पौलुस एक जगह पर ये घोषणा करते हैं कि, न तो दुनिया और न ही सच्चाई के भाई लोग उनका न्याय करने में सक्षम थे - केवल प्रभु, जो हृदय को पढ़ सकते हैं और हमारी सभी स्थितियों और परीक्षाओं और कमजोरियों को जान सकते हैं, जिससे लड़ने के लिए हमें कोशिश करनी है, वे ही हमारा न्याय ठीक

से कर सकते हैं। प्रेरित पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 4:3 वचन में बताया भी है कि, "वरन मैं स्वंय अपने आप को नहीं परखता"। यह एक उत्कृष्ट योजना है कि, परमेश्वर के बच्चों के रूप में जो कर्तव्यनिष्ठा से चलने का दावा करते हैं, हम न उनपर दोष लगाएं और न ही समान परिस्थितियों में खुद पर दोष लगाएं। हमें बस दिन-प्रतिदिन केवल आगे बढ़ते जाना है, स्वर्गीय अनुग्रहों में उन्नति करने और अपने स्वामी की सेवा करने के लिये हम जितना अच्छा कर सकते हैं, उसके अनुसार अपना सर्वोत्तम प्रयत्न करते जाना है, और सभी सभी परिणामों को प्रभु पर छोड़ देना है। `Z.'99-139` R2480:2 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (26 जुलाई)

प्रकाशितवाक्य 2:17 जो जय पाए, उस को मैं गुप्त मन्ना में से दूंगा; और उसे एक श्वेत पत्थर भी दूंगा; और उस पत्थर पर एक नाम लिखा हुआ होगा, जिसे उसके पाने वाले के सिवाय और कोई न जानेगा।

सभी जयवंत लोगों को यह साबित करना आवश्यक है कि, वे प्रभु के लिये हर एक दूसरी वस्तु बलिदान कर देंगे; यहाँ तक कि, प्रभु के प्रेम और समर्थन को बनाए रखने के लिए, जयवंत की श्रेणी के लोग, दूसरे प्राणियों के प्रेम, उनकी संगती और मंजूरी को भी बलिदान कर सकते हैं। हम ये मानते हैं कि, प्रभु के समर्पित लोगों पर यह परीक्षा दिन - प्रतिदिन ज्यादा

से ज्यादा करीब आती जा रही है, और हममें से हर एक को यह भी याद रखना जरुरी है, कि यह हमारी परीक्षाओं के विभिन्न तत्वों में से एक है, ताकि इन परीक्षाओं के अनुसार हमको हमारा स्नेह स्वर्गीय वस्तुओं पर लगाना है, और सभी सांसारिक वस्तुओं और प्राणियों पर से हमारे लगाव को रोक देना है या मार डालना है, क्योंकि ऐसी सभी वस्तुएं, प्रभु के प्रति हमारे स्नेह, सेवा आदि में प्रतिस्पर्धा लाती हैं। `Z.'99-140` R2480:6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (27 जुलाई)

दानिय्येल 6:5 तब वे लोग कहने लगे, हम उस दानिय्येल के परमेश्वर की व्यवस्था को छोड़ और किसी विषय में उसके विरुद्ध कोई दोष न पा सकेंगे।

सभी के पास दानिय्येल की तरह नेतृत्व करने की आत्मा नहीं पाई जाती है, और न ही सभी को दर्शन और प्रकाशन और स्वप्न के अर्थ को बताने की आत्मा दी जाती है, जैसे की दानिय्येल को दी गई थी; लेकिन सबके पास धार्मिकता के सिद्धांतों के प्रति वही भक्ति की आत्मा जरूर रहेगी, जिस भक्ति को दिव्य प्रावधानों के अंदर, इस सकेत मार्ग के हर एक कदम पर परखा जायेगा, जैसे - जैसे वे लोग उनके पदचिन्हों पर चलने की खोज में रहते हैं, जिन्होंने हमारे सामने एक उदाहरण रखा है - हमारे

दानिय्येल, हमारे प्रधान, हमारे प्रभु यीशु। फिर, सभी को, जिन्होंने मसीह के नाम को अपनाया है, उन्हें खुद को अधर्म से दूर करना चाहिए; ऐसे सभी को विश्वासी बनना चाहिए: "दानिय्येल बनने का साहस करो।" `Z.'99-167` R2494:4 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (28 जुलाई)

1 पतरस 3:14 यदि तुम धर्म के कारण दुख भी उठाओ, तो धन्य हो।

हमें केवल तभी संतुष्ट होना है, या यह सोचना है कि हम धार्मिकता के कारण दुःख उठा रहे हैं, जब हमारी सच्चाई के प्रति वफादारी के कारण (प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में) कोई हम से नफरत करे। जैसा की प्रेरित कहते हैं कि, कई लोग दूसरे कारणों से भी दुःख पाते हैं, जिसे धार्मिकता के लिए दुःख उठाना नहीं गिना जाएगा -- बुराई करने के कारण, दूसरों के मामलों में टाँग अड़ाने के कारण, अभद्रता और असभ्यता के कारण या संयम के ज्ञान की कमी के कारण, जो कि प्रभु का वचन बताता है। यह हमारा कर्तव्य है की, हमें न केवल परमेश्वर की इच्छा को जानने के लिये पढ़ना है, बल्कि यह भी देखना है कि, हमारे आस-पास की परिस्थितियाँ कैसी है और फिर हमें जीवन में ऐसे औसत दर्जे का रास्ता अपनाना है, जिसमें सबसे पहले हमारे पास उस रास्ते के प्रति दिव्य स्वीकृति हो, और दूसरा, जितना संभव हो सके, हमारे इस रास्ते से दूसरों को कम से कम

परेशानी, कम से कम असुविधा और कम से कम अप्रसन्नता होनी चाहिए, और उसके बाद हमें पूरी दृढ़ता से परमेश्वर की निगरानी, ज्ञान और दिव्य प्रबन्ध पर निर्भर करना है। `Z.'99-166,167` R2493:3,6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (29 जुलाई)

दानिय्येल 3:17 हमारा परमेश्वर, जिसकी हम उपासना करते हैं वह हमें तेरे हाथ से भी छुड़ा सकता है।

परमेश्वर के दिव्य प्रावधान भिन्न हो सकते हैं, और उनके लोगों को यह तय नहीं करना है कि कब उनका उल्लेखनीय उद्धार होगा, और कब उनको स्पष्ट रूप से, परमेश्वर के दिव्य अनुग्रह को बिना प्रकट रूप से देखे, उनके दुश्मनों की इच्छा के ऊपर पूरी तरह से छोड़ दिया जाएगा... कभी-कभी, परमेश्वर के लोग जो बंधे हुए हैं, सत्य के बारे में दूसरों को बताने के लिए जो प्रतिबंध उनपर है, जैसे कि तीन इब्रानियों पर था जिन्हें रस्सी से बाँधकर आग के भट्टे में डाल दिया गया था, पर आग ने उस रस्सी को जलाकर उन्हें आज़ाद कर दिया था और वाकई में उनको परमेश्वर की महिमा करने का ज्यादा बड़ा अवसर मिला, जो वे तीन इब्रानी नहीं कर पाते अगर उन्होंने कोई दूसरा रास्ता अपनाया होता। इसलिए, यह हमारे लिए नहीं है कि हम पहले से निर्धारित करें कि, हमारे खुद के लिए दिव्य प्रावधान क्या होना चाहिए; हमें यहाँ पर अपने अधिकार और कर्त्तव्य

पर ध्यान देते हुए, परिणामों की परवाह किए बिना, प्रभु पर पूरा भरोसा करते हुए, उस प्रावधान का अनुकरण करते जाना है। `Z.'99-171` R2496:3 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (30 जुलाई)

श्रेष्ठगीत 2:15 जो छोटी लोमडिय़ां दाख की बारियों को बिगाड़ती हैं, उन्हें पकड़ ले।

बहुत हैं जो ढिलाई से परमेश्वर के प्रति अपने समर्पण को लेते हैं और उस समर्पण के प्रति थोड़ी सी उल्लंघन करते हैं, यह कहते हुए, -- "दुनिया में सामान्य रूप से इस तरह की सावधानी और इतने अलग जीवन का क्या उपयोग है"? आह! यह बहुत उपयोगी है, छोटी चीजों में जय पाने से, ये हमें तैयार करता है बड़ी चीज़ों पर जय पाने में और उस जय को sसम्भव बनाता है: और इसके विपरीत, शरीर की इच्छा के प्रति छोटी चीज़ों में खुद को समर्पित करने का मतलब है, पूरी तरह से इस युद्ध में हमारी हार। हम जो मसीह में "नई सृष्टि" के रूप में पहचाने जाते हैं, यह जानते हैं कि हमारी परिक्षा होगी (यदि हमारी परिक्षा वाकई रूप में अभी चालू नहीं हुई है तो), और हम ये महसूस कर सकें कि, जैसे हम खुद से इन्कार करने का अभ्यास करते हैं जीवन की छोटी चीज़ों में, और स्वभाविक रूप से इस शरीर की लालसाओं को मार दें जो की खाने, पहनने और

व्यवहार, आदि से सम्बधित होती हैं, ऐसा करने से हम आत्मिक रूप से मजबूत होंगे और "जयवन्त" होने के योग्य होंगे। `Z.'99-172` R2496:6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (31 जुलाई)

1 कुरिन्थियों 3:13 तो हर एक का काम प्रगट हो जाएगा; क्योंकि वह दिन उसे बताएगा, इसलिये कि आग के साथ प्रगट होगा और वह आग हर एक का काम परखेगी कि कैसा है।

यहाँ पर प्रेरित पौलुस इस समय की अग्निमय परीक्षा की बात कर रहे हैं, और, एक उत्साही मसीही के विश्वास और कार्यों की तुलना सोने, चांदी और कीमती पत्थरों से बने घर से करते हैं। वे यह घोषणा करते हैं कि, इस दिन की आग यानि अभी के समय की परीक्षाएँ, इस युग के अंत में, हर एक मनुष्य के कार्य को परखेगी, कि उसका कार्य और विश्वास किस प्रकार का है, और इस आग में सच्चा विश्वास और खरा चरित्र रूपी ढाँचा ही टिक पायेगा और बाकि सब कुछ जल कर भस्म हो जायेगा। पर हमें यह याद रखना है कि, ऐसे वफादार चरित्रों का गठन अचानक से नहीं होता है, कुछ घण्टों या कुछ दिनों में -- जैसा की मशरुम का पौधा बढ़ता है -- पर इस तरह के मजबूत चरित्र धीरे धीरे बढ़ते हैं, बारीकी से बढ़ते हैं, और जैतून के पेड़ की तरह मजबूत होते हैं। `Z.'99-171` R2496:5 आमीन